तृतीयः पाठः

वीरः वीरेण पूज्यते

(वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है)

*(**स्थानम्**–अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्। अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तेते। वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः।)*

सेनापतिः : विजयतां सम्राट्।

पुरुराजः : एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते।

अलक्षेन्द्रः : (साक्षेपम्) अहो! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज?

पुरुराजः : यवनराज! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा।

अलक्षेन्द्रः : किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।

पुरुराजः : पराक्रमते, यदि अवसरं लभते। अपि च यवनराज!

बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।
उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता॥

आम्भिराजः सम्राट्! वाचाल एष हन्तव्यः।

सेनापतिः : आदिशतु सम्राट्।

अलक्षेन्द्रः : अथ मम मैत्रीसन्धे अस्वीकरणे तव किम् अभिमतम् आसीत् पुरुराज!

पुरुराजः : स्वराज्यस्य रक्षा, राष्ट्रद्रोहाच्च मुक्तिः।

अलक्षेन्द्रः : मैत्रीकरणेऽपि राष्ट्रद्रोहः?

पुरुराजः : आम् राष्ट्रद्रोहः यवनराज! एकम् इदं भारतं राष्ट्रम्, बहूनि चात्र राज्यान्, बहवश्च शासकाः। त्वं मैत्रीसन्धिना तान् विभज्य भारतं जेतुम् इच्छसि। आम्भीकः चास्य प्रत्यक्षं प्रमाणम्।

अलक्षेन्द्रः : भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम्। इह तावत् राजानः जनाः च परस्परं द्रुह्यन्ति।

पुरुराजः : तत् सर्वम् अस्माकम् आन्तरिकः विषयः। बाह्यशक्तेः तत्र हस्तक्षेपः असह्यः यवनराज! पृथग्धर्माः, पृथग्भाषाभूषा अपि वयं सर्वे भारतीयाः। विशालम् अस्माकं राष्ट्रम्। तथाहि—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः॥

अलक्षेन्द्रः : अथ मे भारतविजयः दुष्करः।

पुरुराजः : न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि।

अलक्षेन्द्रः : (सरोषम्) दुर्विनीत, किं न जानासि, इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे?

पुरुराजः : जानामि, किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज! भारतीयाः वयं गीतायाः सन्देशं न विस्मरामः।

अलक्षेन्द्रः : कस्तावत् गीतायाः सन्देशः?

पुरुराजः : श्रूयताम्।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः॥

अलक्षेन्द्रः : (किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया। पुरुराज! त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे। ब्रूहि कथं त्वयि वर्तितव्यम्।

पुरुराजः : यथैकेन वीरेण वीरं प्रति।

अलक्षेन्द्रः : (पुरोः वीरभावेन हर्षितः) साधु वीर! साधु! नूनं वीर असि। धन्यः त्वं, धन्या ते मातृभूमिः। (सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते!

सेनापतिः : सम्राट्!

अलक्षेन्द्रः : वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय।

सेनापतिः : यत् सम्राट् आज्ञापयति।

अलक्षेन्द्रः : (एकेन हस्तेन पुरोः द्वितीयेन च आम्भीकस्य हस्तं गृहीत्वा) वीर पुरुराज! सखे आम्भीक! इतः परं वयं सर्वे समानमित्राणि, इदानीं मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।

(सर्वे निर्गच्छन्ति)

|| अभ्यास प्रश्न ||

➠ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

1. अलक्षेन्द्रः कः आसीत्? **(2016CB,19AC)**
2. पुरुराजः कः आसीत्? **(2017AC,19AG)**
3. पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्? **(2017AD,19AB,20MF)**
4. वीरः केन पूज्यते? **(2016CD,17AA,AB,19AA,AD,20ME,MA,MF)**
5. आम्भीकः अलक्षेन्द्रस्य कः आसीत्?
6. 'सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा' इति कः प्रत्युत्तरम् अददात्?
7. केन कारणेन पुरुराजः अलक्षेन्द्रस्य मैत्रीसन्धिम् अस्वीकारयत्?
8. पुरुराजः अलक्षेन्द्रं कस्याः सन्देशम् अकथयत्?
9. अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत्?
10. गीतायाः कः सन्देशः? **अथवा** पुरुराजः गीतायाः कः सन्देशम् अकथयत्? **(2016CG)**
11. अलक्षेन्द्रः पुरुं किम् अपृच्छत्?
12. भारत विजयः न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि, कस्य उक्तिः?
13. भारतम् एकं राष्ट्रम् इति विरुद्धम् कस्य उक्तिः? **(2018HF,20MD)**
14. अलक्षेन्द्रः पुरुराजस्य केन भावेन हर्षितः अभवत्?
15. किं जित्वा भोक्ष्यसे महीम्? **(2016CG)**

➠ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) सेनापतिः –विजयतां सम्राट् ····················अवसरं लभते।

(ख) बन्धनं ···भावो हि वीरता। **(2017AE,19AF)**

(ग) पुरुराजः-आम्...................................परस्परं द्रुह्यन्ति।
(घ) सेनापति! आदिशतु सम्राट् ....असह्यः यवनराज!
(ङ) उत्तरं यत् ....तत्र सन्ततिः।
(च) अलक्षेन्द्रः—भारतम्..........................अस्माकं राष्ट्रम्।
(छ) दुर्विनीत, किं न..............................वीरेण वीरं प्रति।
(ज) अलक्षेन्द्रः अथ मे...........................गीतायाः संदेशः।
(झ) हतो वा..विगतज्वरः। **(2016CF,17AB,20MC)**

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) यवन सेनापति बन्दी पुरुराज को लाता है।
(ख) वीरभाव ही वीरता होती है।
(ग) वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है।
(घ) तुम भारत को जीतना चाहते हो।
(ङ) यह हमारा आन्तरिक विषय है।
(च) सागर के उत्तर में भारतवर्ष है।
(छ) भारत-विजय क्या मेरे लिये दुष्कर है?

➡ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) राष्ट्रद्रोहः, हिमाद्रिः, विश्वविजयी में समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए।
(2) महोत्सव, चास्य, द्रोहाच्च, वीरोऽपि में सन्धि-विच्छेद कीजिए।
(3) पूर्वकालिक क्रिया में 'क्त्वा' और ल्यप् (य) प्रत्यय जोड़कर जो शब्द पाठ में आये हों उन्हें लिखिए और उनका अर्थ भी बताइए।
(4) प्राप्स्यसि, भोक्ष्यसे, अस्माकम्, तव इन क्रिया-पदों और शब्दों में क्रमशः पुरुष, वचन, लकार और विभक्ति लिखिए।

➡ पर्यायवाची शब्द

पर्वत—अद्रि, अचल। **समुद्र**—वारिधि, जलधि, सिन्धु, रत्नाकर।

➡ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) पुरुराज का कौन-सा गुण आपको प्रभावित करता है, उसे तालिका द्वारा व्यक्त कीजिए।
(2) देश में पुरुराज जैसे अनेक देश-प्रेमी राजा पैदा हुए हैं, उनकी एक सूची बनाइए।

शब्दार्थ

वर्तेते = हैं। **अलक्षेन्द्रः** = सिकन्दर। **अभिवादयते** = अभिवादन करता है। **साक्षेपम्** = आक्षेप, उलाहने के साथ। **मन्यसे** = मानते हो (मध्यम पु0 एकवचन, लट् लकार - आत्मनेपदी क्रिया)। **वाचाल** = बकनेवाला। **हन्तव्यः** = मारने योग्य। **मैत्री-सन्धे** = मित्रता की सन्धि (के प्रस्ताव का)। **आम्** = हाँ। **विभज्य** = बाँटकर। **जेतुम्** = जीतने के लिए। **हिमाद्रेश्चैव** = (हिम् + अद्रेः + च + एव) और हिमालय पर्वत के ही। **हतो** = मरकर। **जित्वा** = जीतकर। **अलं** = व्यर्थ (निषेधार्थ में)। **ब्रूहि** = कहो। **वर्तितव्यम्** = व्यवहार करना चाहिए। **नूनं** = निश्चय ही, अवश्य। **उद्दिश्य** = लक्ष्य करके। **मोचय** = छोड़ दो, खोल दो। **गृहीत्वा** = पकड़ करके। **पराक्रमते** = पराक्रम करता है। **आम्** = हाँ। **द्रुह्यन्ति** = द्रोह। **उद्दिश्य** = लक्ष्य करके। **सम्पादयामः** = करते हैं। **विषयः** = मामला। **दुष्करः** = कठिन। **विगत ज्वरः** = सन्तापरहित होकर। **इतः परम्** = अब से। **विरसान्** = नीरस। **गुञ्जया** = रत्ती से। **भास्वान्** = सूर्य।

●●